ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(5): 256-259
www.allresearchjournal.com
Received: 09-03-2022
Accepted: 14-04-2022

Dr. Sarika Kumari
Assistant Professor, Cite,
Ranchi, Jharkhand, India

Corresponding Author:
Dr. Sarika Kumari
Assistant Professor, Cite,
Ranchi, Jharkhand, India

शिक्षक प्रशिक्षण में गुणवत्तपूर्ण शिक्षा; Quality accurance in teacher education

Dr. Sarika Kumari

प्रस्तावना

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ ऐसी शिक्षा से है, जो निर्माण शिक्षा के संपूर्ण विकास की उपलब्धि को इंगित करता है। वर्त्तमान की शिक्षा अपने उद्धेश्यों की प्राप्ति में असफल रही हूँ। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में प्रायः उसी शिक्षा का समावेश होता है, जो शिक्षा शिक्षण अधिगम में छात्रों की रूचि एवं क्षमताओं की पूर्ती करे और छात्रों को जीवन दान देने योग्य बनाए। भारत में कई ऐसे पढ़े–लिखे हैं जो शिक्षा प्राप्ति के बाद भी बेराजगार हैं।

UNESCO ने 1993 में शिक्षण अधिगम के चार उद्धेश्य निर्धारित किए हैं।–

- बनना सिखना (Learning to be)- इसके अनुसार छात्रों को इस प्रकार तैयार किया जाता है कि वे देश काल परिस्थितियों के अनुसार समाज के साथ समन्वय स्थापित कर सकें। छात्र अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वहण भी कर सके।
- करना सिखना (Learning to do)- यूनेस्कों के अनुसार शिक्षा को उद्धेश्य सिर्फ छात्रों का ज्ञानात्मक विकास करना हीं नहीं है, बल्कि उसके क्रियात्मक विकास पर भी बल देने की आवश्यकता है। यह छात्रों को कर के सिखने को स्थाई शिक्षा मानते हैं और वही शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहलाती है।
- जानना सिखना (Learning to Know)- इसका अर्थ छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने से होता है। अर्थात उसे उस ज्ञान के बारे में पता होना चाहिए कि उसका उपयोग कब और कैसे करना है। किसी भी शिक्षा को हम गुणवत्तापूर्ण तभी कह सकते हैं, जब वह शिक्षा छात्र को जानने में उसका सहयोग करे।
- एक साथ रहना सिखना (Learning to be together)- जो शिक्षा व्यक्तियों को समाज में एक साथ रहना सिखाती है उस शिक्षा को हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहते हैं। अर्थात यह शिक्षा समाज के समस्त कार्यों में सहयोग करना सिखाती है।

संयुक्त राष्ट्र एक अधिक उज्जवल और समृद्ध भविष्य के लिए शिक्षा के महत्तव को समझता है और इसलिए उसका मानना है कि केवल एजुकेशन नहीं, बल्कि क्वालिटी एजेकेशन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। अपने सतत् विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals) में, संयुक्त राष्ट्र ने 2030 तक दुनिया में बदलाव लाने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को एक प्रमुख लक्ष्य के रूप में पहचाना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से संयुक्त राष्ट्र का तात्पर्य सभी के लिए समान और मानक शिक्षा है जो आजीवन सीखने और ज्ञान की प्राप्ति को बढ़ावा दे। समावेशिता और समानता (Inclusivity and Equitability) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की नींव है न कि ऊंची साक्षरता दर। शिक्षा को समझने और इसे दुनिया को बदलने का साधन बनाने के लिए यह एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण है।

शिक्षक–शिक्षा में बदलाव इसलिए आवश्यक हो गया है कि इसके प्रभावों और संभावनाओं का विस्तार हो सके। शिक्षक–शिक्षा के उपागम में मूलभूत बदलाव किए जाने की जरूरत है। शिक्षक–शिक्षा का 'नयी दृष्टि' शीर्षक इसलिए ही नहीं रखा गया है कि इसके सारे आयाम पूरी तरह नए हैं। बल्कि इसलिए यह शीर्षक रखा गया है क्योंकि यह शिक्षक–शिक्षा के बारे में हमारी दृष्टि में एक निश्चित बदलाव लाने की बात करत है। शिक्षक–शिक्षा को स्कूली व्यवस्था की आवश्यकताओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील होना पड़ेगा। इसके लिए शिक्षकों को निम्नलिखित दोहरी भूमिका के लिए तैयार करना होगा। वे सीखने–सिखाने की परिस्थितियों में उत्सावर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्यार्थियों को उनके पतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों के तथा चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समार्थ बनाएँ। जो एक समूह के सक्रिय

सदस्य के रूप में विद्यार्थियों के बदलते हुए सामाजिक तथा व्यक्तिगत जरूरतों को ध्याम में रखते हुए स्कूली पाठ्यचर्या के नवीकरण की प्रक्रिया में योगदान देने के प्रयास करें। शिक्षक को शिक्षा के सामाजिक संद्र्भों के प्रति जवाबदेह और संवेदनशील होना चाहिए। साथ हीं उसे विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के अंतर राष्ट्रीय तथा वैश्विक संदर्भों, सामाजिक समता, न्याय आदि के राष्ट्रीय लक्ष्यों की जानकारी भी होनी चाहिए। शिक्षक–शिक्षा को इस प्रकार का होना चाहिए जो प्रत्येक प्रशिक्षु को समर्थ बना सके।

- ✓ ज्ञान को चिंतनशील सीखने की सतत उभरती प्रक्रिया माने।
- ✓ अपना पेशेवर उन्मुखीकरण करने के लिए सोच समझ कर प्रयास करता रहे। यह विशेष परिस्थितियाँ अध्यापक के रूप में उसकी भूमिका तय करने में मदद करेंगी।
- ✓ वास्तविक परिस्थितियों में न केवल समझदारी वाले रवैये को अपनाने की उपयुक्त योग्यता का विकास करे बल्कि इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण करने के भी योग्य बने।
- ✓ उन सामाजिक पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील हों जिनमें उसे काम करना है।
- ✓ उसका भाषायी ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो।
- ✓ सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सके।
- ✓ व्यक्तिगत अपेक्षाओं, आत्मबोध, क्षमताओं, अभिरूचियों आदि की पहचान कर सके।
- ✓ सीखने के तरीके समझे, सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के संभावित तरीके जाने तथा सीखने के प्रकार, गति तथा तरीकों के आधार पर विद्यार्थियों की विभिन्नताओं को समझें।
- ✓ ग्रहणशील हो और लगातार सीखता रहे, समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके।
- ✓ व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थ निकालने को अधिगम अर्थात सीखना समझें।
- ✓ ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के वाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।

नवकल्पित षिक्षक–षिक्षा कार्यक्रम में आवष्यक बदलाव

शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम इन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए जवाबदेह हो। यह शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम में बुनियादी बदलावों द्वारा हीं संभव है।

अधिगम (सिखना)

विद्यार्थी अधिगम का अनुभव सक्रिय जुड़ाव और सहभागिता के आधार पर प्राप्त करते हैं। इसलिए अधिगम श्रोतों की तालाश, विचारों का सम्मिलन, चिंतन, विश्लेषण और आत्मसातीकरण की प्रक्रिया होती है। इस पर विद्यार्थी के समाजिक संदर्भ का बड़ा प्रभाव होता है।

विद्यार्थी

शिक्षक की भूमिका विद्यार्थी और ज्ञात के संदर्भ में आवश्यक मानी जाती है इसलिए शिक्षक–शिक्षा का मुख्य फोकस विद्यार्थी और सीखने पर होना चाहिए।

सीखने के तरीके और गति के आधा पर विद्यार्थियों में भिन्नता पाई जाती है। शिक्षकों को विद्यार्थियों में सीखने की वास्तविक क्षमता की पहचान करने और विद्यार्थियों के 'सीखने के रास्ते' को प्रतिबंधित किए बिना या बिना किसी आदेश आगे ले जाने के सरल तरीके ढूँढ़ने की जरूरत है। शिक्षक–शिक्षा को शिक्षकों को इस दिशा में सक्षम बनाने वाला होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों की विविधताओं का सम्मान कर सके।

शिक्षक

सीखने के मार्ग में सहायता करने वाले की होती है शिक्षक वह होता है जो व्यक्तिगत तथा संदर्भ विशिष्ट अनुभवनों को इस तरीके से सामने रखे कि वे राष्ट्र के संदर्भ में स्वीकृत हों। शिक्षक को यह समझना चाहिए कि पाठ्यचर्या विद्यार्थी केंद्रित सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में विकसित होती है। शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा सीखे जाने की प्रक्रिया में संभव सहयोग देने मात्र के लिए ही तैयार किया जाता है। ऐसी कोई एक पद्धति नहीं है जो सभी विद्यार्थियों को एक हीं ढ़ंग से सिखा सके। हर शिक्षक को बोधगम्य अभ्यास द्वारा अलग–अलग विद्यार्थियों में सीखने के तरीके पहचानने होंगे। शिक्षक को अपने आपको ऐसे पेशेवर के रूप में देखने की आवश्यकता है, जिसमें उपर्युक्त क्षमता, लगन, उत्साह, नए तरीके अपनाने की लगन और चिंतनशीलता है। विद्यार्थी स्कूल में अब उसे ज्ञान के श्रोत के रूप में नहीं देखते। शिक्षक का क्रिया–आधारित शिक्षण की प्रकृति और गतिशिलता को समझना चाहिए। हमारे देश में अलग–अलग विशिष्टताओं वाली विविध स्कूली व्यवस्थाएँ हैं, फिर भी वे राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न चरणों की स्कूली शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों में हिस्सेदारी निभाती हैं। शिक्षक को इन विविधताओं और इनकी अपेक्षाओं का अंदाजा होना चाहिए। इससे शिक्षक को किसी भी स्कूल व्यवस्था में समायोजन करने में और ठीक से काम करने में मदद मिल सकती है।

ज्ञान

शिक्षक–शिक्षा में ज्ञान का अवयव शिक्षा अनुशासन के विस्तृत क्षेत्र से लिया गया है और इसे इसी तरह से दर्शाए जाने की जरूरत है। इसलिए हीं शिक्षा के संदर्भ में इसकी प्रकृति बहु–अनेशानिक है। शैक्षिक घटनाओं–क्रियाकलापों, कार्यों, प्रयासों, प्रक्रियाओं, अवधारणाओं, घटनाओं इत्यादि का वर्णन कर सके तथा इनकी व्याख्या कर सके। ऐसा करने के लिए अन्य संज्ञानात्मक विषयों से अवधारणाओं को लिया जा सकता है, परन्तु शैक्षिक घटकों को मिश्रित समझ के लिए इन्हें समाकलित करने की आवश्यकता है। शिक्षक–शिक्षा में ज्ञान के विविध अवयव शुरूआत करने वाले के लिए स्पष्ट होने चाहिए जैसे विद्यार्थी, शिक्षक और शैक्षिक दृष्टिकोण जिसमें किसी के कार्यों को समझा जा सके और शिक्षक–शिक्षा के दौरान अधिगम को अधिक सार्थक, अर्थपूर्ण और उपयोगी बनाया जा सके। इस प्रकार की व्यवस्था पर्याप्त अवसर देती है सैद्धांतिक और व्यवहारिक पहलू को अलग–अलग देखने के बजाय एक साथ समाकलित रूप में देखने के। इससे शिक्षक में क्षेत्र–अभ्यासों संबंधी आलोचनात्मक संवेदनशीलता का विकास होगा।

सामाजिक संदर्भ

शिक्षा पर उस परिवेश का बड़ा प्रभाव होता है जिससे शिक्षक और विद्यार्थी आते हैं। विद्यार्थी के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की जगह उसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए। ऐसी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए जो सामाजिक और रोजमर्रा के संदर्भों से जुड़ी हो। साधारणतः शैक्षिक चिंतकों जैसे गांधी, टैगोर, गिजूभाई, डिवी एवं अन्य द्वारा व्यक्त कई विचारों को उनके समाजिक एतिहासिक संदर्भों को समझें। शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम में आधुनिक भारतीय समाज के मुख्य मुद्दों जैसे समाज का बहुलतावादी स्वभाव और अस्मिता के मुद्दे, जेंटर, समानता और गरीबों को महत्त्व दिया जाना चाहिए। शिक्षा के व्यापक उद्धेश्यों की गहरी समझ और समाज से उसके संबंधों का बोध भी हो सकेगा।

मूल्यांकन

सीखने के मूल्यांकन एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें पर्याप्त संवेदनशीलता और लचीलापन होना चाहिए ताकि यह अनुमान हो सके कि विद्यार्थी ने वास्तव में क्या सीखा है। नए शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम में मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत् हो, ऐसा सुझाव है।

शिक्षक–प्रशिक्षक, विद्यार्थी–शिक्षकों का मूल्यांकन उनके गुणों जैसे सहयोग और सहभागिता, अन्वेषण और एकीकरण के आधार पर करते हैं। मूल्यांकन आमतौर पर गुणात्मक होगा न कि मात्रात्मक जिससे कि लगातार यह प्रक्रिया सतत हो और विविध गतिविधियों में उनकी निष्पत्ति के आधार पर उनका स्थान तय होगा।

नए षिक्षक–षिक्षा कार्यक्रम के लिए आवष्यक समझे जाने वाले कार्य

शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम में अधिगम अनुभव मुख्य रूप से विद्यार्थी प्रधान होंगे क्योंकि ये अनुभव उन्हें सीखने के लिए नए आयामों से परिचित कराऐंगे, जिनमें तरह–तरह की अधिगम परिस्थितियाँ शामिल होंगी जो सीखने में विविधता, अपसारी सोच, चिंतन और सीखने वाली परिस्थितियों के साथ सूक्ष्मदृष्टि के साथ बरताव को बढ़ावा देंगी।

शिक्षक–शिक्ष कार्यक्रम में शिक्षक की वे क्षमताएँ जो सामान्य मौखिक औ शाब्दिक क्षमताओं से परे होती हैं तथा जिनकी सहभागिता आधारित शिक्षा में आवश्यकता है, को विकसित किया जाना शामिल होना चाहिए–

- विद्यार्थियों की तर्क क्षमता का इस तरह विकास कि उससे उसे खोज करने तथा उसे बढ़ावा देने में सहयोग मिले।
- विद्यार्थियों के लिए पठन सामग्री। समूह या व्यक्ति आधारित समस्या सुलझाने का लक्ष्य। अध्ययन का उपयोग और अनुभव का लाभ। विद्यार्थियों को इस तरह की अनुक्रिया देना बिना उत्तर या हल के, जो उन्हें आगे सोचने के लिए बढ़ावा दे।
- शुद्धता का फैसला किए बिना विभिन्न प्रकार के जवाबों को सुनना।
- विद्यार्थी–अध्यापकों में अनुभव कराने से हीं धीरे–धीरे विकसित होंगी, इनके बारे में पढ़ने या इन पर भाषण सुनने से नहीं। इसके लिए, विभिन्न प्रकार के अनुभव जो इन्हें न केवल कार्यजगत को पहचानने और समझने में सक्षम बनाते हैं वरन इन्हें वांछित अधिगम सद्भों की 'उत्तम कल्पना' भी प्रदान करते हैं।
- सांस्थानिक तौर पर नया शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम बदली हुई व्यवस्था की माँग करता है। इस अर्थ में इसके कार्यान्वयन के लिए आवश्यक पाठयचर्या विवरण तैयार किय जा सकते हैं।
- इस प्रकार के विद्यार्थी–आधारित वैविध्यपूर्ण पाठयक्रम की संभावना आज आई0सी0टी0 के कारण बढ़ गई है। अधिगम परिस्थितियों के निर्माण के क्षेत्र में कई लोगों की भागीदारी होने से शिक्षकों की नई दक्षताओं की माँग शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम ऐसा होना चाहिए। जिसमें विद्यार्थी–शिक्षक को विभिन्न प्रकार की अधिगम परिस्थितियों में काम करना सिखाया जाए।
- शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों में पर्याप्त और सुव्यवस्थित बदलाव ला सकेंगे और उससे नई जमीन तैयार होगी। इससे सेवाकालीन प्रशिक्षण का माहौल भी बदलेगा, क्योंकि नए शिक्षक की आवश्यकताएँ अलग होंगी। इस परिस्थिति में ''सेवा–पूर्व और सेवाकाल में अपने आप मजबूत संबंध हो जाएगा।'' इससे सेवाकाल कार्यक्रम पुरी तरह शिक्षक विकास कार्यक्रम होगा और इस अर्थ में शिक्षक के लिए यह जीवनपर्यत शिक्षा होगी।

अनुषंसाएँ

शिक्षक–शिक्षा की पाठ्यचर्या और प्रक्रिया के पुनर्योजन की आवश्यकता को दोराते हुए जैसी कि विभिन्न शिक्षा आयोगों ने अनुशंसा की है। चिंतनशील शिक्षकों को तैयार किए बिना स्कूली शिक्षा में बदलाव लाने के उद्धेश्य से स्कूली पाठ्यचर्या की समीक्षा का अभ्यास सफल नहीं हो सकता। शिक्षक–शिक्षा के सरोकारों के संदर्भ में आवश्यक है:–

- शिक्षक–शिक्षा के एक एकीकृत ढाँचे में ऐसे मूल घटक शामिल हो सकते हैं, जो सम्पूर्ण शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम– पूर्व प्राथमिक, प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तरों सामान्य रूप से लागू हो।
- शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम को स्कूल पाठ्यचर्या के नवीकरण की प्रक्रिया और अपने क्षेत्र विशेष के संदर्भ में प्रासंगिक हो।
- शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करते हुए प्रशिक्षकों, विद्यार्थि, शिक्षकों और शिक्षकों पुरी आजादी दी जानी चाहिए।
- शिक्षक–शिक्षा प्रक्रिया आधारित मौडल शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों का मुख्य आधारित ढ़ांचा बनना चाहिए, जिसपर शिक्षा के पूर्व प्राथमिक, प्रारंभिक तथा माध्यमिक स्तरों के शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों का पुनः निर्माण किया जाय।
- एन0सी0ई0आर0टी0 और एन0सी0टी0ई0 के बीच उच्च स्तरीय सलाहकार संबंध हो ताकि स्कूली पाठ्यचर्या और शिक्षक शिक्षा को जोड़ा जा सके।
- स्कूली पठ्चर्या नवीकरण के संदर्भ में राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की समीक्षा होनी चाहिए।

नई राष्ट्रीय षिक्षानिति– 2020 के माध्यम से षिक्षक षिक्षा में गुणवत्तापूर्ण बदलाव

किसी भी देश के विद्यार्थियों का भविष्य उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इस तथ्य को विज्ञान–सम्मत शोध व जनमान्य दोनो का समर्थन प्राप्त है। दुर्भाग्य से भारत में विद्यालयी व उच्च शिक्षा दोनो के शिक्षकों की गणुवत्ता पर लगातार प्रश्न चिन्ह लगते रहे हैं। ऐसे में यह अनिवार्य हो जाता है कि हम अपने सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को न केवल शिक्षक बनने के लिए आमंत्रित करें, वरन उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण भी दें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कहती है कि ''हमारे छात्रों और हमारे राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम संभव भविष्य सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों की प्रेरणा और सशक्तिकरण की आवश्यकता है।'' इस संदर्भ में शिक्षा नीति स्वीकारती है कि शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए और परिणामस्वरूप शिक्षकों की गुणवत्ता वाछित मानकों को प्राप्त नहीं कर पा रही है। ऐसे में जनमानस द्वारा यह प्रश्न पूछना स्वाभाविक है कि ''शिक्षक शिक्षा में क्या बदलाव चाहती है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020''

- इस नीति में शिक्षक शिक्षा में पहला बड़ा बदलाव शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि व प्रकृति को लेकर है। वर्त्तमान में चल रहे 17 शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जगय इस नीति में तीन कार्यक्रमों की चर्चा की गयी है। पहला– चार वर्षीय एककीकृत बी0एड0 कार्यक्रम, दूसरा– द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम। तीसरा कार्यक्रम एक वर्षीय बी0एड0 होगा, जिसमें विषय विशेष में 4 वर्ष की स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी को प्रवेश ले सकेंगे।
- शिक्षक शिक्षा में इंगित दूसरा बड़ा बदलाव शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने वाली संस्थाओं की प्रकृति से है।
- शिक्षक शिक्षा को केवल बहु–विषयक संस्थानों में हीं संचालित किया जाना चाहिए। इस मंतव्य के दृष्टीगत यह नीति वर्ष 2030 तक सभी एकल शिक्षक शिक्षा संस्थानों को बहु–विषयक संस्थानों को गुणवत्ता की ओर से अग्रसर होने के लिए यह नीति एक वर्ष का समय देती है। एक वर्ष के समय के उपरान्त भी सुधार न करने वाले संस्थानों के खिलाफ यह नीति कठोर कार्यवाही की अनुशंसा भी करती है।
- शिक्षक–शिक्षा को लेकर इस नीति में तीसरा बड़ा बदलाव शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश व पाठ्यचर्या को लेकर

नजर आता है। यह नीति शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समाजशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान, भारत से जुड़े ज्ञान और इसके मूल्यों/लोचार/कला/परंपराएं'' आदि के समावेशन पर बल देती है। इस नीति में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भी सुध ली गई है। नीति में सेवारत शिक्षकों तथा विद्यालयों के प्रधानाचार्यों दोनो से प्रत्येक वर्ष में 50 घण्टे के सतत् व्यवसायिक विकास (सीपीडी) कार्यक्रमों में भाग लेने की अपेक्षा की गयी है।

- नीति में पाचवाँ बड़ा बदलाव शिक्षा की नियामक संस्था ''राष्ट्रीय अध्यापक शिक्ष परिषद'' की भूमिका को लेकर है। यह नीति ''एन0सी0टी0ई0'' की रेगुलेटरी पावर को राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा विनियामक परिषद (एन0एच0ई0आर0सी0) को सौंपने की सिफारिश करती है।
- नीति में छठा बदलाव विशिष्ट शिक्षा और व्यावसायिक शिक्ष को शिक्षक शिक्षा के विमर्श के दायरे मं लाया जाना विद्यालयी शिक्षा में दिव्यांग व सीखने में कठिनाई वाले विद्यार्थियों की शिक्षा हेतु यह नीति सामान्या शिक्षकों को विशेष शिक्षकों के रूप में तैयार करने पर बल देती है। इस नीति में वर्ष 2005 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 500 विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा का अनुभव'' का लक्ष्य रखा गया है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की प्रासंगिकता भी स्वीकारती है।

शिक्षक शिक्षा के संबंध में शिक्षा नीति 2020 द्वारा सुझाये गये यह सभी बदलाव स्वागत योग्य है। अतः शिक्षा नीति में सुझाये गये बदलावों के आलोक में नीति नियन्ताओं का अगला पड़ाव ''शिक्षक शिक्षा संबंधी नीति के क्रियान्वयन के तात्कालिक, मध्यावधि व दीर्घकालिक लक्ष्य तय करना तथा उन्हें प्राप्त करने के तरीकों का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए।

अतः अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की आधार कूंजी हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के माध्यम से हीं हम विद्यालयों में विद्यार्थियों तक प्रभावी रूप से पहुँच सकते हैं एवं अपने कक्षाओं को रोचक, नवाचारी एवं आलोचनात्मक चिंतन का केन्द्र बना सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. डा0 जी0सी0 भट्टाचार्य– अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2003
2. गुप्ता, डा0 एस0पी0: भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1995
3. करिकुलम फ्रेमवर्क कार टीचर एजुकेशन : डिसकशन डाक्यूमेंट (1996) एन0टी0टी0ई0, नई दिल्ली।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
5. Hindi newsroom post.com: लेखक पंकज अरोड़ा, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय।
6. Quora-hiquora.com